श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्रीरामदूतस्तोत्रम्

वज्रदेहममरं(वँ) विशारदं(म्)

भक्तवत्सलवरं(न्) द्विजोत्तमम्।

रामपादनिरतं(ङ्) कपिप्रिय(म्)

रामदूतममरं(म्) सदा भजे।। 1।।

(अंजनीसुत तुम्हें सदा भजें)

ज्ञानमुद्रितकरानिलात्मजं(म्)

राक्षसेश्वरपुरीविभावसुम्।

मर्त्यकल्पलतिकं(म्) शिवप्रदं(म्)

रामदूतममरं(म्) सदा भजे।। 2।।

(अंजनीसुत तुम्हें सदा भजें)

जानकीमुखविकासकारणं(म्)

सर्वदुःखभयहारिणं(म्) प्रभुम्।

व्यक्तरूपममलं(न्) धराधरं(म्)

रामदूतममरं(म्) सदा भजे।। 3।।

(अंजनीसुत तुम्हें सदा भजें)

विश्वसेव्यममरेन्द्रवन्दितं(म्)

फल्गुणप्रियसुरं(ञ्) जनेश्वरम्।

पूर्णसत्त्वमखिलं(न्) धरापतिं(म्)

रामदूतममरं(म्) सदा भजे।। 4।।

(अंजनीसुत तुम्हें सदा भजें)

आञ्जनेयमघमर्षणं(वँ) वरं(लँ)

लोकमङ्गलदमेकमीश्वरम्।

दुष्टमानुषभयङ्करं(म्) हरं(म्)

रामदूतममरं(म्) सदा भजे ।। 5।।

(अंजनीसुत तुम्हें सदा भजें)

सत्यवादिनमुरं(ञ्) च खेचरं(म्)

स्वप्रकाशसकलार्थमादिजम्।

योगगम्यबहुरूपधारिणं(म्)

रामदूतममरं(म्) सदा भजे।। 6।।

(अंजनीसुत तुम्हें सदा भजें)

ब्रह्मचारिणमतीव शोभनं(ङ्)

कर्मसाक्षिणमनामयं(म्) मुदा।

पुण्यपूरितनितान्तविग्रहं(म्)

रामदूतममरं(म्) सदा भजे।। 7।।

(अंजनीसुत तुम्हें सदा भजें)

भानुदीप्तिनिभकोटिभास्वरं(वँ)

वेदतत्त्वविदमात्मरूपिणम्।

भूचरं(ङ्) कपिवरं(ङ्) गुणाकरं(म्)

रामदूतममरं(म्) सदा भजे।।8।।

(अंजनीसुत तुम्हें सदा भजें)

भागवत रसिकामृत भाग 1,पृष्ठ संख्या 250 पर,मुद्रण त्रुटि के कारण छूटी हुई पंक्तियां

तहाँ जाइ देखी बन सोभा। गुंजत चंचरीक मधु लोभा॥

नाना तरु फल फूल सुहाए। खग मृग बृंद देखि मन भाए॥

सैल बिसाल देखि एक आगें। ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें॥

उमा न कछु कपि कै अधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहि खाई॥

गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी॥

अति उतंग जलनिधि चहुँ पासा। कनक कोट कर परम प्रकासा॥